B.Ed. IInd Year

Subject :- Knowledge Language & Curriculum

Topic :- महात्मा गाँधी का शैक्षिक दर्शन

महात्मा गाँधी जी का शैक्षिक दर्शन

गाँधी जी ने शिक्षा को जीविकोपार्जन का प्रमुख उद्देश्य माना है, उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है।

1. शिक्षण विधियाँ → गाँधी जी शिक्षण में शिक्षण विधियों के प्रयोग पर बल देते थे उनका मानना था कि बालकों को शिक्षा, शिक्षण विधी के द्वारा ही दी जानी चाहिए।

2. शिक्षा का माध्यम

गाँधी जी ने शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को बनाने पर जोर दिया उन्होंने अंग्रेजी भाषा को केवल ऐच्छिक रूप में लागू करने को कहा।

3. शिक्षक

गाँधी जी ने अपनी शिक्षा योजना में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान बताया है शिक्षक को अपने विषय से सम्बन्धीत ज्ञान होना चाहिए गाँधी जी ने शिक्षक से न्यायप्रियता, प्रेम

P.T.O.

अहिंसा स्वदेश, प्रेम आदि गुणों की उपेक्षा की है।

पाठ्यक्रम

गाँधी जी ने पाठ्यक्रम के अन्तर्गत नैतिक विषय को शामिल करने पर बल दिया है। इनमें आध्यात्मिक पक्ष को प्रबलता ही है। गांधी जी ने पाठ्यक्रम को क्रियात्मक स्वरूप प्रदान किया।

गुरु शिष्य सम्बन्ध

गाँधी जी का मानना था कि गुरु एवं शिष्य के मध्य प्रेम घनिष्ठ मित्र, आत्मिक व पवित्र सम्बन्ध होने चाहिए। गांधी जी ने गुरु शिष्य को पिता-पुत्र की संज्ञा दी है।

अनुशासन

अनुशासन स्थापित करने के लिए गांधी जी ने बच्चों को शारीरिक दण्ड देने के खिलाफ थे। वे बच्चों में स्वअनुशासन की भावना उत्पन्न करना चाहते थे।

बुनियादी शिक्षा

गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा प्रस्तुत की। इन्होंने कहा कि भारत की ज्यादातर जनसंख्या गांव में निवास करती है, वहां के लोग अज्ञान अशिक्षित है। इसलिए इन्होंने निशुल्क अनिवार्य एवं स्वावलम्बी शिक्षा प्रदान करने की योजना को प्रस्तुत किया।

Scanned with CamScanner